Peer Reviewed/ Refereed Journal

ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
Impact Factor SJIF=4.157

Received on 3rd Mar. 2019, Revised on 8th Mar. 2019; Accepted16th Mar., 2019

शोध पत्र

# उच्च प्राथमिक स्तर पर पुरूष एवं महिला शिक्षकों में व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

* शिल्पा गहलोत
, रिसर्च स्कॉलर, महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय
17 ई 54 चौपासनी हाऊसिंग बोर्ड, जोधपुर
ई मेल :–shilpa_gehlot@yahoo.co.in, Mob.-7597366921

***मुख्य शब्द*** –उच्च प्राथमिक स्तर, शिक्षक, व्यावसायिक संतुष्टि आदि।

## शोध सारांश

विद्यालय छात्रों के सर्वागीण विकास के दिशा निर्देशन होते है। विद्यालय के उद्देश्यों के संवाहक शिक्षक होते है। एक और शिक्षक विद्यालयों की उपलब्धियों का प्रत्यक्ष संरक्षक होता है वही दूसरी ओर शिक्षक विद्यार्थी के जीवन एवं व्यक्तित्व का नव निर्माता भी होता है। व्यवसाय का चयन करने से व्यक्ति की रूचि, क्षमता व कुशलता के साथ व्यवसाय चुनने के अवसर व प्रशिक्षण, क्षमताएं की सहायता होती है। यदि व्यक्ति अपनी योग्यता, क्षमता एवं रूचि के अनुकूल व्यवसाय प्राप्त कर लेता हैं तो उससे उसे व्यावसायिक संतुष्टि भी प्राप्त होती है। व्यावसायिक असंतुष्टि व्यक्ति के जीवन को कुंठाग्रस्त तथा नीरसमय बना देती है। अतः समाज के स्थायित्व व उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी रूचि के अनुसार व्यवसाय मिले तथा उसे उसमें संतुष्टि की प्राप्ति हो। इसी परिप्रेक्ष्य में यह जानना आवश्यक हो जाता है कि विद्यालय के "प्राण" शिक्षक जिनके ऊपर भावी पीढ़ी को राष्ट्र के प्रति समर्पित होने के भाव को विकसित करने का दायित्व है। वे अपने कार्य से कितने संतुष्ट है उनकी संतुष्टि को प्रभावित करने वाले तत्व कौन–कौन से है। शिक्षण व्यवसाय के प्रति उनकी रूचि, अभिवृति कैसी है। उनकी रूचि के सम्बन्ध में क्या स्थिति है।

शिक्षक यदि अपने व्यवसाय के प्रति रूचि तथा सकारात्मक दृष्टिकोण रखे तो न केवल वह अपना कार्य आसानी से पूर्ण कर सकेगा बल्कि उस कार्य को करने से व्यावसायिक संतुष्टि भी प्राप्त होगी। वैसे तो शिक्षा के सभी स्तरों पर शिक्षकों के दायित्वबोध एवं व्यवसायिक संतुष्टि आवश्यक है परन्तु उच्च प्राथमिक स्तर पर इनकी महत्ता बढ़ जाती हैक्योंकि इस स्तर पर शिक्षा में अनेक प्रकार की चुनौतियाँ आती है जो विद्यालय, परिवार अथवा समाज से सम्बन्धित हो सकती है। इन चुनौतियों के निराकरण में शिक्षक की अहम भूमिका होती है।

### प्रस्तावना

"शिक्षा वर्तमान में भविष्य के लिए निवेश है।" इस निवेश का निर्णायक घटक शिक्षक है। शिक्षक राष्ट्र निर्माता है तथा बालक देश के भावी कर्णधार है। शिक्षक का व्यक्तित्व, शिक्षक का दायित्व, मूल्य प्रेरणा सभी कुछ विद्यार्थियों पर चुम्बकीय प्रभाव डालते है। अतः उसका अपने व्यवसाय के प्रति संतुष्ट होना आवश्यक है तभी वह राष्ट्र की उन्नति में सहायक हो सकते है। व्यावसायिक संतुष्टि जहां व्यक्ति को सुखी जीवन प्रदान करती है। वहाँ समाज हित भी करती है। व्यवसाय के प्रति रूचि, उससे होने वाली आय की पर्याप्तता भावी उन्नति के आधार व्यवसाय की सामाजिक प्रतिष्ठा आदि अनेक तत्व व्यावसायिक संतुष्टि का निर्धारण करते है। वैसे तो शिक्षा के सभी स्तरों पर शिक्षकों के दायित्वबोध एवं व्यवसायिक संतुष्टि आवश्यक है परन्तु उच्च प्राथमिक स्तर पर इनकी महत्ता बढ़ जाती है। क्योंकि इस स्तर पर शिक्षा में अनेक प्रकार की चुनौतियाँ आती है जो विद्यालय, परिवार अथवा समाज से सम्बन्धित

हो सकती है। इन चुनौतियों के निराकरण में शिक्षक की अहम भूमिका होती है, वही शिक्षक इनका निराकरण/समाधान कर सकता है जो अपने दायित्वबोध को भलीभाँति समझता हो तथा अपने व्यवसाय से संतुष्ट रहते हुए अपनी मानसिक परिस्थितियों को नियंत्रण में रखने की सामर्थता रखता हो।

**शोध के उद्देश्य**

जीवन के सभी कार्य सौद्देश्य होते हैं। उद्देश्य के बिना जीवन दिशाहीन हो जाता है। शोध का उद्देश्य शोधकार्य का प्रकाश स्तम्भ है जो उसे राह से विचलित होने से बचाकर सही मार्ग दिखाता है। किसी भी कार्य की सफलता उसके निर्धारित उद्देश्यों में छिपी होती है। मनुष्य के प्रत्येक कार्य के पीछे विशिष्ट लक्ष्य होता है जो कार्य के सफलतापूर्वक संचालन में सहायक होता है। इस शोध का उद्देश्य उच्च प्राथमिक स्तर पर पुरूष एवं महिला शिक्षकों में व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना है।

**परिकल्पना**

वैज्ञानिक अनुसंधान विधि में किसी परिस्थिति या जीवन के व्यवहार को स्पष्ट करने या उसके रहस्य का पता लगाने वाले आधारभूत नियम का अनुसंधानकर्त्ता पहले अनुमान लगाता है और उसी अनुमान को परिकल्पना कहते हैं। ये परिकल्पना पूर्णरूप से सही हो सकती है अथवा केवल आंशिक रूप में बिल्कुल निराधार भी हो सकती है।

परिकल्पना को अंग्रेजी में 'Hypothesis' कहते हैं जो दो शब्दों से मिलकर बना है।

हाइपो + थीसिस जहॉ 'हाईपों' का अर्थ होता है संभावित या जिसकी पुष्टि की जाए थीसिस का अर्थ होता है – समस्या के समाधान का कथन। हाइपोथीसिस का शाब्दिक अर्थ उस संभावित कथन से होता है जो समस्या का समाधान प्रस्तुत करता है। परिकल्पना ऐसे समाधान को प्रस्तुत करती है जिसकी पुष्टि प्रदत्तों के आधार पर की जा सके। अध्ययन के उद्देश्यों को प्रतिपादित करने के लिए निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया कि उच्च प्राथमिक स्तर पर पुरूष एवं महिला शिक्षकों में व्यवसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

**परिसीमन**

अनुसंधान के सही परिणाम प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि शोध क्षेत्रों को एक निश्चित सीमा में बांधा जाए तथा अध्ययन की विश्वसनीयता व वैधता बनाए रखने के लिए भी परिसीमन आवश्यक है।

इस समस्या के अध्ययन के लिए क्षेत्रीय एवं व्यक्तिगत शोध परिसीमाओं को ध्यान में रखते हुए अध्ययन की सीमा का निर्धारण इस प्रकार किया गया है :–

1. प्रस्तुत अध्ययन हेतु जोधपुर शहर को चुना गया है।
2. प्रस्तुत शोध में केवल उच्च प्राथमिक स्तर के पुरूष एवं महिला शिक्षकों को लिया गया है।
3. प्रस्तुत शोध में पुरूष शिक्षकों की संख्या 50 एवं महिला शिक्षकों की संख्या 50 का चुनाव किया गया है।
4. इस प्रकार प्रस्तुत शोध में कुल 100 शिक्षकों का चुनाव किया गया है।

**न्यादर्श**

न्यादर्श किसी भी अनुसंधान कार्य की आधारशिला है। न्यादर्श के आधार पर सम्पूर्ण जनसंख्या के विषय में कुछ निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। न्यादर्श रूपी आधारशिला जितनी सुदृढ़ होगी अनुसंधान के परिणाम उतने ही विश्वसनीय एवं परिशुद्ध होंगे।

प्रस्तुत अध्ययन में जोधपुर जिले के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालय से कुल 100 पुरूष एवं महिला शिक्षकों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है।

## शोध विधि

प्रस्तुत शोध की प्रकृति को मद्देनजर रखते हुए शोधकर्त्री ने सर्वेक्षण विधि का चुनाव किया है। सर्वेक्षण से तात्पर्य ऐसे अध्ययनों से है जिससे अनुसंधानकर्त्री किसी विशेष स्थान पर जाकर सूचनाओं को संकलन करती है।

## शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री ने निम्न शोध उपकरण का प्रयोग किया :–

1. शिक्षक व्यावसायिक संतुष्टि प्रश्नावली – प्रमोद कुमार एवं डी.एन. मुथा।

## सांख्यिकी तकनीक

शोधकर्त्री ने प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित सांख्यिकी तकनीकों का प्रयोग किया :–

1. समान्तर माध्य
2. प्रमाप विचलन
3. टी परीक्षण/क्रान्तिक मान

**सारणी – 1**

**महिला एवं पुरूष शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का मध्य मान, प्रमाप विचलन व टी–मूल्य**

| क्र.सं. | चर | समूह | कुल संख्या | मध्यमान | प्रमाप विचलन | टी मूल्य | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 01 | व्यावसायिक संतुष्टि | महिला | 50 | 25.06 | 2.33 | 5.60 | .01 विश्वास स्तर पर सार्थक |
| 02 | | पुरूष | 50 | 22.1 | 2.93 | | |

**विश्लेषण :–** उपरोक्त सारणी उच्च प्राथमिक स्तर के महिला एवं पुरूष शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि को दर्शाया गया है। महिला शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का मध्यमान 25.06 व प्रमाप विचलन 2.33 है तथा पुरूष शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का मध्यमान 22.1 व प्रमाप विचलन 2.93 है। df 98 पर "t" का सारणी मूल्य .05 व .01 विश्वास स्तर पर 1.98 व 2.63 है। गणना किया गया "t" का मूल्य 5.60 है जो कि .01 विश्वास स्तर पर अंतर की सार्थकता को अभिव्यक्त करता है। अतः दोनो चरों की व्यावसायिक संतुष्टि में अंतर सार्थक है।

## शोध निष्कर्ष

प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण के अनुसार उच्च प्राथमिक विद्यालय के महिला शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि कम पायी गयी अर्थात् तुलनात्मक रूप से उच्च प्राथमिक विद्यालय के महिला शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि पुरूष शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि से अधिक है।

## संदर्भ स्त्रोत

1. अग्रवाल, जे.सी. (1966), "एज्युकेशन रिसर्च", न्यू दिल्लीः आगरा बुक डिपो।
2. बेस्ट, जे. डब्ल्यू (1995), "रिसर्च इन एजुकेशन", न्यू दिल्लीः प्रेंटिस हाल ऑफ इण्डिया प्रा.लि.।

3. चौपड़ा, आर.के. "विश्वविद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि व विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पति के संबंध में स्कूलों के संगठनात्मक वातावरण का अध्ययन" पीएच.डी. एज्युकेशन, आगरा यू., 1982।
4. हेनरी, ई. गेरेट (2010), "शिक्षा मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग", लुधियानाः कल्याणी पब्जिशर्स।
5. कपिल, एच.के. (1992) "अनुसंधान विधियाँ" आगराः हरिप्रसाद भार्गव कचहरी घाट ।
6. राम मोहन बाबू, वी. "जॉब सेटिस्फेक्शन एटीट्यूड टूवर्ड टींचिग जॉव इन्वाल्वमेन्ट, इफिसियेंसी टीचिंग एण्ड परसेप्शन ऑफ ऑर्गनाईजेशनल क्लाइमेट ऑफ टीचर्स रेजिडैंसियल एण्ड नॉन रेजिडेंसियल स्कूल्स" फिफ्थ सर्वे ऑफ एजुकेशनल्स रिसर्च, Vol. I 1992।

*** Corresponding Author:**
शिल्पा गहलोत
*, रिसर्च स्कॉलर, महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय*
*17 ई 54 चौपासनी हाऊसिंग बोर्ड, जोधपुर*
*ई मेल :–shilpa_gehlot@yahoo.co.in, Mob.-7597366921*